eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

पर्यावरण संरक्षण और भारतीय ज्ञान परम्परा

प्रो0 कान्ती शर्मा[1]
[1]राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय सिरसागंज फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 20 September 2025 Accepted & Reviewed: 25 September 2025, Published: 30 September 2025

Abstract

पर्यावरण शब्द का अर्थ है परि (आस–पास या चारों ओर का), आवरण (ढका हुआ) इस शब्द में प्रकृति के विभिन्न घटक जैसे – जल, वायु, मृदा, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु मानव जाति एवं उनसे संबधित अन्य घटकों के परस्पर व्यवहार समाहित है। एवं इस सम्पूर्ण तंत्र को ही पर्यावरण की संज्ञा देते हैं। पर्यावरण के बिना मानव का सतत् विकास सम्भव नहीं है अतः इस बहुमुल्य पर्यावरण के संरक्षण में हमारे योगदान की इस लेख में विवेचना है इसी बात को साहित्यिक रूप से भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ जोड़ा जाता है भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्वित होकर विनम्रता,सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेस्ठता का आधार स्वीकार किया गया था और आज भी उन्हीं मूल्यों को ग्रहण करती हुई भारतीय ज्ञान परम्परा चली आ रही है।

मुख्य शब्द– पर्यावरण संरक्षण, भारतीय ज्ञान परम्परा, ज्ञान और विज्ञान

Introduction

पर्यावरण एवं मानव के संबंधों की व्याख्या हमारे वेदों में की गई है जिससे यह पता चलता है कि वेदो को सृष्टि विज्ञान का मुख्य ग्रन्थ माना गया है। इन वेदों में सृष्टि के जीवनदायी तत्वों की विशेषताओं का सूक्ष्म व विस्तृत विवरण है। ऋग्वेद में अग्नि के रूप और उसके गुणों की व्याख्या की गई है। यजुर्वेद में वायु के गुणों, कार्यों और विभिन्न रूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। अथर्ववेद पृथ्वी तत्व का मुख्य वेद है। सामवेद का प्रमुख तत्व जल है। आकाश तत्व का वर्णन सभी वेदो में हुआ है। वैदिक महर्षियों ने इन प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना और इसलिए प्रकृति के सभी रूपों की उपासना की जाती थी। इस तरह रामायण काल में भी पर्यावरण एवं प्रकृति को मानव से घनिष्ठ मानते हुए विशेष संरक्षण प्रदान किया गया था। इसी प्रकार द्वापर युग में प्रकृति को उतना ही महत्व दिया गया जितना त्रेता युग में, इसका वर्णन हमें महाभारत में मिलता है। महाभारत में प्रत्येक तत्व को देवता सदृश स्वीकार कर उसकी अभ्यर्थना की जाती थी। उन दिनों वृक्षों को काटना महापाप समझा जाता था। इससे यह पता चलता है कि उस युग में भी मनुष्य प्रकृति के कितना करीब था और उसकी भावना प्रकृति से कितनी जुड़ी थी।

वैदिक एवं दार्शनिक साहित्य की भांति पुराणों में भी पर्यावरणीय चेतना सब और मुखर एवं प्रखर है। प्रायः सभी पुराणों में पर्यावरण के घटकों को पूजनीय माना जाता है। पहाड़ को देवात्मा हिमालय बताया है तो नदियों को देवी का पर्याय माना है। जिसमें पूर्णतया गंगा का स्वरूप तो अवर्णनीय है। पुराणों की रचना का आधार भी सृष्टि के तत्वों को लेकर बना है । इतना ही नहीं अनेक पुराणों का नामकरण भी इन तत्वों के नाम को लेकर हुआ है जैसे– अग्निपुराण, वायुपुराण आदि । प्रकृति मनुष्य की परम्परा ही नहीं बल्कि संस्कृति भी है, जो कि हमारी रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी रीति – रिवाजों में शामिल हो गई है। जैसे– तुलसी पूजा, आम के वृक्ष की पूजा, आंवले के वृक्ष की पूजा आदि ये सभी रीति–रिवाज न सिर्फ हमें मन और तन की ताजगी देते है बल्कि प्रकृति संरक्षण में भी मदद करते है। अकेले भारत ही नहींरू अमेरिकी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

महाद्वीप, पूर्वी अफ्रीका के द्वीप, आस्ट्रेलिया, फिलीपींस आदि की अनेक प्राचीन सभ्यताओं में प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा–भावनाओं के अनेक उदाहरण मिलते है। किंतु जैसे–जैसे मनुष्य प्रकृति के अनुदानों से लाभान्वित होता गया उसके लोभ में भी बढोत्तरी होती गयी । लोभ की वृत्ति ने श्रद्धा के भाव को कम कर दिया।

पर्यावरण की वर्तमान स्थिति– पर्यावरण की इस सुदीर्घ एवं अति प्राचीन परमपरा को आधुनिकता की आग ने भारी नुकसान पहुंचाया है दोहन और शोषण, वैभव एवं विलास की रीति नीति औद्योगीकरण ने पर्यावरण को संकट में डाल दिया है। फलतरू जीवन भी संकटग्रस्त है। सब और विपन्नता है। प्राकृतिक आपदाओं का क्रूर तांडव है। इन दिनों मनुष्य द्वारा वंनस्पति जगत् के साथ जो व्यवहार किया जा रहा है। वनों की कटाई के कारण वन क्षेत्र निरंतर घटते जा रहे है। विशेषज्ञों का कहना है कि पर्यावरण संतुलन एवं जीवन रुपी रथ चक्र को इसी ढंग से गतिमान रखने के लिए समूचे भू–भाग पर 33ः क्षेत्र में वृक्ष, वनस्पतियों का होना अनिवार्य है। परंतु आज स्थिति अत्यंत विस्फोटक हो गई है। अब मात्र 10ः प्रतिशत भूमि ही सघन वनों से आच्छादित रह गई है। अपना देश कुछ दशकों पूर्व तक 70ः भूभाग वनों से आच्छादित था । सन् 1854 तक करते–करते 40ः रह गया । सन् 1952 में यह घटकर 22ः तक पहुंच गया और आज मात्र 19. 5 फीसदी भूभाग में जंगल बचे है।

आज का युग वैज्ञानिक युग माना जाता है। हर तरफ नई–नई खोजें और आविष्कार हो रहे है. इन खोजों ⁄ आविष्कारों का सही मायने में पर्यावरण के संरक्षण में उपयोग करना चाहिए ताकि पर्यावरण को संरक्षित किया जा सके इन आंदोलनों में टी.वी. रेडियों, समाचार पत्रों का बखूबी इस्तेमाल किया जा सकता है। विज्ञापनों द्वारा जन साधारण को जागृत किया जा सकता है व उनसे अपील की जा सकती है कि वे अपना सहयोग देकर हमारी पारम्परिक धरोहर को जीवित रखें । छात्र–छात्राओं का इसमें सहयोग लिया जा सकता है उन्हें पर्यावरण के महत्व व हानियों से अवगत किया जा सकता है। इस तरह हम जन–जन तक यह बात फैला सकते है कि पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है। वृक्षारोपण, प्राकृ तिक वनसंरक्षण जैसे कार्यों को प्रोत्साहन देकर वर्तमान –पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करके हम अपनी धरोहर को बचा सकते है।

वर्तमान में भारतीय ज्ञान परमारा – यह भारत भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संम्पूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परम्परा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रहीं है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रहीं तथा कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रंथों में पूर्व से ही उल्लिखित है. भारतीय ज्ञान परमारा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है।

बीती कुछ शताब्दियों से इस भूमि को इस प्रकार महसूस करवाया जाता है कि यहां कभी ज्ञान अंकुरित ही नहीं हुआ । सहस्त्र वर्ष की दासता में हमारी सहस्त्रों पीढ़ियों ने पीड़ा को झेलते हुए इस ज्ञान को संजोए रखा परंतु समय के साथ उसकी उपादेयता क्षीण होती रही। इसीलिए समय है भारत के ज्ञान वृक्ष की छाया में पोषित हो रहे इस विश्व को बताने का कि भारत का गुरुत्व अभी भी कायम है। भारत का ज्ञान श्गंगा जल के समान है, जो निर्मल और अविराम है। आधुनिक युग में डिप्रेशन, स्ट्रेस, इंजाइटी व मेंटल, ड्रामा जैसे शब्दों का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में बढ़ गया है, आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य की जीवन शैली को अपनाने के कारण इन शब्दों को भी अपने जीवन में समाहित कर चुकी है। परंतु पुरातन भारत में इस प्रकार की मनोवृत्ति देखने को नहीं मिलती, इसका कारण रहा भारतीय दर्शन ।

उपसंहार – हमें ज्ञात है कि पर्यावरण संरक्षण हमारी प्राचीन परम्परा रही है परन्तु आधुनिकता की आग ने इसे भारी नुकसान पहुंचाया है। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था– श्प्रकृति हम सभी की आवश्यकता तो पूरी कर सकती हैं, किन्तु किसी एक के लालच को भी पूरा नहीं कर सकती हैं। इसी प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन, स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए

व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भण्डार प्रदान करती है जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

मेरे इस शोध पत्र को लिखने का उद्देश्य है कि वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति मन,कर्म, वाणी से पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान दें और भारतीय ज्ञान परम्परा जो हमारे भारत वर्ष की अनमोल धरोहर है उसे ज्ञान को संवर्धित करके रखे जिससे की विश्व कल्याण हो सके और आने वाली पीढ़ी भारत को हीन दृष्टि से न देखकर गौरवपूर्ण दृष्टि से देखे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीवास्तव डॉ. राजीव कुमार— प्राचीन भारतीय धर्म एवं समाज वैभव लक्ष्मी प्रकाशन—वाराणसी।
2. श्रीवास्तव — डॉ. राजीव कुमार— पर्यावरण वैभव लक्ष्मी प्रकाशन वाराणसी
3. डॉ. मनोदत्त पाठक — वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पृःसं— 489
4. डा. आर. एन. त्रिवेदी— अथर्ववेद पृ.सं.—24
5. डॉ. मुकेश जैन— भारतीय ज्ञान परंपरा व शोध पृ.सं. 41
6. डा. अनिल शिवानी —भारतीय ज्ञान परंपरा